राजीवभाई के व्याख्यान पर आधारीत घरेलु चिकित्सा

आयुर्वेद औषधी तथा होमीओपॅथी औषधी

भारत बचाओ आंदोलन

ऐसी कोई समस्या नही,जीसका समाधान नही...!

सभी समस्याओं का समाधान,
राजीवभाई का व्याख्यान...

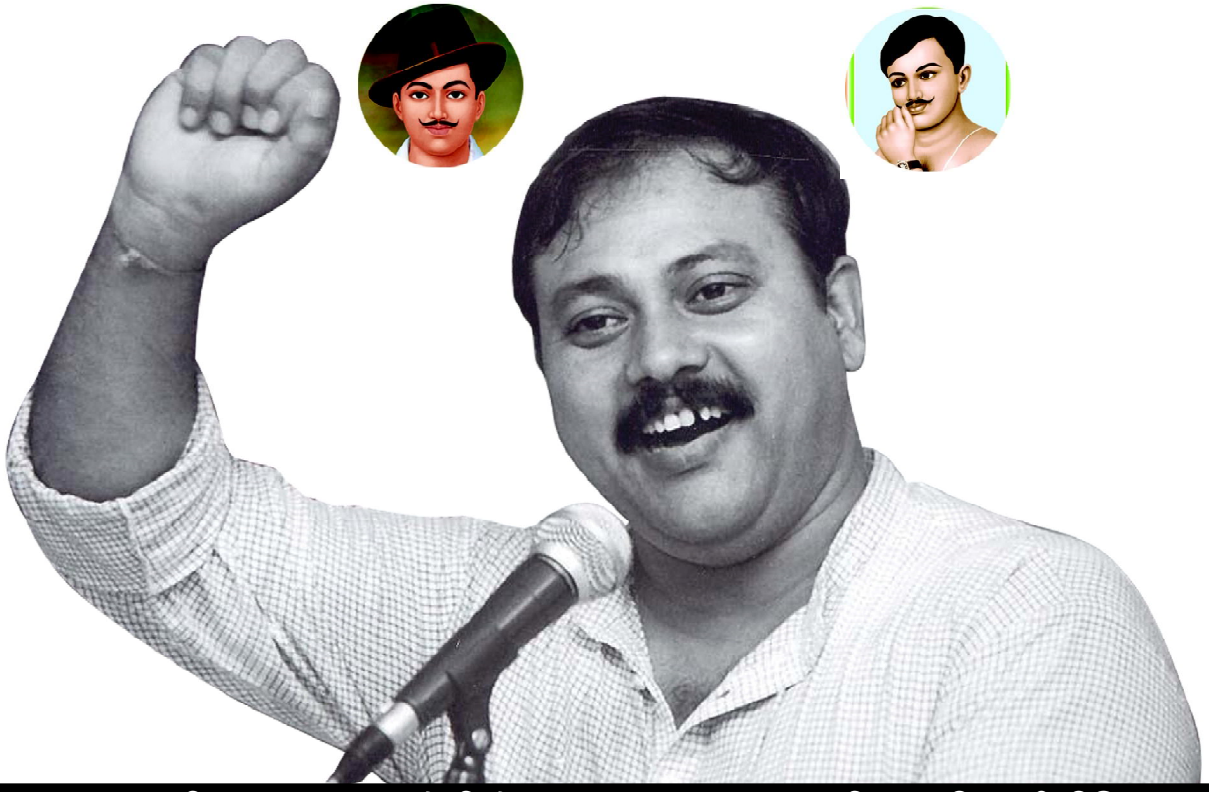

अमर शहीद,राष्ट्रभक्त,स्वदेशी के प्रखर प्रवक्ता आदरणीय **राजीवभाई दीक्षित**

संकलनकर्ता - स्वदेशी प्रचारक **नानाभाई जैन** ९८६०० ८३४७३
यह पुस्तक प्राप्त करने हेतू उपर दिये गये नंबर पर संपर्क कर सकते है ।

राजीवभाई को हर कोई **युट्यूब** पर सुन रहा है...क्या आप सुन रहे है ?
आपने बहूतों को सुना होगा,लेकीन राजीवभाई को नही सुना...
तो आपने कुछ नही सुना...

स्वस्थ रहने की कुंजी -

जीवनशैली व खानपान मे बदलाव से कई रोगों से मुक्ती पाई जा सकती है । घरेलू वस्तुओं के उपयोग से शरीर तो स्वस्थ रहेगा ही बिमारी पर होनेवाला खर्च भी बचेगा ।

कृपया इनका अवश्य ध्यान रखें–

- फलों का रस,अत्याधिक तेल की चिजें,मठ्ठा,खट्टी चिजें रात मे नही खानी चाहिए ।
- घी या तेल की चिजें खाने के बाद तुरंत पाणी नही पिना चाहीये बल्की एक–देढ घंटे के बाद पाणी पिना चाहिये ।
- भोजन के तुरंत बाद अधिक तेज चलना या दौडना हानिकारक है । इसलिए कुछ देर आराम करके जाना चाहिए ।
- शाम को भोजन के बाद शुध्द हवा मे टहलना चाहिये । खाने के बाद सो जाने से पेट की गडबडी हो जाती है ।
- प्रात:काल जल्दी उठना चाहिये और खुली हवा मे व्यायाम या शरीर श्रम अवश्य करना चाहिये ।
- तेज धूप मे चलने के बाद,शारिरीक मेहनत करने के बाद या शौच जाने के तुरंत बाद पाणी कदापी नही पिना है ।
- शहद और घी बराबर मात्रा मे मिलाकर नही खाना चाहिए,वह विष बन जाता है ।
- खाने पिने मे विरोधी पदार्थो को एक साथ नही लेना चाहिये जैसे दूध और कटहल,दूध और दही,दूध और प्याज, दूध और मछली,अदि चिजें एकसाथ नही लेनी चाहिये ।
- सिरपर कपडा बांधकर या मोजे पहनकर कभी नही सोना चाहिये ।
- बहूत तेज या धिमी रोशनी मे पढना,अत्याधिक टीव्ही या सिनेमा देखना,अधिक गर्म–ठंडी चिजों का सेवन करना अधिक मिर्च मसालोंका प्रयोग करणा,तेज धूप मे चलना इन सबसे बचना चाहिये ।
- रोगी को हमेशा गर्म अथवा गुनगुना पाणी ही पिलाना चाहिये । रोगी को ठंडी हवा,परिश्रम तथा क्रोध से बचना है
- आयुर्वेद मे लिखा है की निद्रा से पित्त शांत होता है,मालीश से वायु कम होती है और उल्टी से कफ शांत होता है । और लंघन करने से बुखार शांत होता है । इसिलिए घरेलू चिकित्सा करते समय इन बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिये ।
- आग या किसी गर्म चिज से जल जाने पर जले भाग के उपर ठंडे पाणी की धारा छोडणी चाहिये ।
- कान मे दर्द होने पर यदी पत्तों का रस कान मे डालना हो तो सुर्यास्त के पहले या सुर्यास्त के बाद ही डालना है ।
- किसी भी रोगी को तेल,घी या अधिक चिकने पदार्थो के सेवन से बचना चाहिये ।
- अजीर्ण तथा मंदाग्नी दूर करनेवाली दवाये हमेशा भोजन के बाद ही लेनी चाहिये ।
- मल रुकने या कब्ज होने की स्थिती मे यदी दस्त कराने हो तो प्रात:काल ही कराने चाहिये,रात्री मे नही ।
- यदी घर मे किशोरी या युवती को मिर्गी के दौरे पडते हो तो उसे उल्टी,दस्त या लंघन नही कराना चाहिये ।
- यदि किसी दवा को पतले पदार्थ मे मिलाना हो तो चाय,कॉफी या दूध मे न मिलाकर छाछ नारीयल पाणी या सादे पाणी मे ही मिलाना चाहिये ।
- हिंग को सदैव देशी घी मे भून कर ही उपयोग में लाना चाहिये । लेप मे कच्ची हिंग लगानी चाहिये ।

ऐसी होनी चाहिये हमारी दिनचर्या -

संपूर्ण सेहत बिना डॉक्टर एक सपना या हकीकत

आज भारत मे लगभग ८०% लोग रोगी है,इन सभी बिमारीयों के इलाज के लिए प्रर्याप्त चिकित्सक नही है । आज से ३००० वर्ष पूर्व बागभट्ट व्दारा रचित अष्टांगव्हदयं के अनुसार बिमार व्यक्ती ही अपना सबसे अच्छा चिकित्सक हो सकता है । बिमारीयों से मुक्त रहने के लिए दैनिक आहार विहार व्दारा स्वस्थ रहने के सुत्रों के आधार पर भाई राजीव दीक्षित ने निम्न सुत्र बनाये है ।

१. रात को दांत साफ करके सोये । सुबह उठकर गुनगुना पाणी बिना कुल्ला किए,बैठकर घुंट-घुंट पिये। एक-दो ग्लास पाणी जितना आप सुविधा से पी सके उतने से शुरुवात करके,धीरे धीरे बढाकर सवा लिटर तक पि सकते है

२. **भोजनान्ते विषमवारी** अर्थात भोजन के अंत मे पाणी पिना विष पिने के समान है । इसलिए भोजन करणे के ४० मिनट पहले आप पाणी पि सकते है और भोजन के ९० मिनट बाद (देड घंटे बाद) पाणी पिना है । पाणी के विकल्प मे आप सुबह के भोजन के बाद मौसमी फलों का ताजा रस पी सकते है (बंद डिब्बेवाला नही पी सक्ते),दोपहर के भोजन के बाद छांछ या लस्सी पी सकते है और रात के भोजन के बाद गरम दूध पी सकते है ।

यह आवश्यक है की,इन चिजों का क्रम उलट-पुलट मत करें ।

३. पाणी जब भी पिये बैठकर और घुंट-घुंट पिये ।

४. फ्रिज(रेफ्रिजरेटर) का पाणी कभी ना पिये । गर्मी के दिनों मे मिट्टी के घडे का पाणी पी सकते है ।

५. सुबह का भोजन सुर्योदय के दो या ढाई घंटे के अंदर करणा चाहिए । आप अपने शहर मे सुर्योदय का समय देख ले और फिर भोजन का समय निश्चित कर ले । सुबह का भोजन पेट भर कर खाये,अपना मनपसंद भोजन सुबह पेटभर कर करें ।

६. दोपहर का भोजन सुबह के भोजन के एक तिहाई कम कर के खाये । जैसे सुबह आपने तीन रोटी खायी है तो दोपहर को दो रोटी खाये । दोपहर को भोजन करने के तुरंत बाद बाई करवट (लेफ्ट साईड) लेट जाये,चाहे तो निंद भी ले सकते है । मगर कम से कम २० मिनीट ज्यादा से ज्यादा ४० मिनीट,इससे ज्यादा नही ।

७. इससे विपरीत शाम का भोजन सुरज डुबने से पहले करना चाहिए,और भोजन के तुरंत बाद नही सोना चाहिए कमसे कम ५०० से १००० कदम जरूर चले,सैर करें ।

८. भोजन बनाने मे कुकर,मायक्रोवे ओहन,फ्रिज,प्रेशर कुकर तथा ॲल्यूमिनियम के बर्तनों का प्रयोग ना करें ।

९. भोजन मे रिफाईंड तेल का उपयोग ना करें । आप जिस क्षेत्र मे रहते है वहॉ जो तेल उपलब्ध होता है उसका शुध्द घानी के तेल का प्रयोग करें । जैसे यदी आपके क्षेत्र मे सरसों ज्यादा होती है तो सरसों का तेल,मुंगफली होती है तो मुंगफली का तेल,नारीयल होते है तो नारीयल का तेल,तिल्ली होती है तो तिल्ली का तेल,करडी होती है तो करडी का तेल । तेल सिधे सिधे घानी से निकला हुवा होना चाहिए ।

१०. भोजन मे हमेशा सेंधा नमक का प्रयोग करना चाहिये,ना की आयोडिन नमक का । चिनी(शक्कर,साखर)की जगह गुड (गुळ) देशी खांड,बुरा शक्कर,मिश्री का प्रयोग कर सकते है ।

११. रात को सोने के पहले हल्दीवाला दूध दांत साफ करणे के बाद पिये ।

१२. सोने से समय सिर पूर्व दिशा की तरफ तथा संबंध बनाते समय सिर दक्षिण दिशा की तरफ करना चाहिए

१३. कोई भी नशा ना करें,चाय,कॉफीउत्पाद,शराब,सिगारेट,गुटका,मांसाहार,मैदा,बेकरी उत्पाद का प्रयोग नही करना चाहिये ।

ऱ्हदय रोग (Heart Desease) मधूमेह (Diabetes) उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) उच्च रक्त वसा (High Cholesterol)

इन बिमारीयों के रोगीयों के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारीया निम्नलिखीत है ।

१. भोजन मे रिफाईंड तेल का उपयोग ना करें । आप जिस क्षेत्र मे रहते है वहॉ जो तेल उपलब्ध होता है,उसीका शुध्द घानी के तेल का प्रयोग करें । जैसे यदी आपके क्षेत्र मे सरसों ज्यादा होती है तो सरसों का तेल,मुंगफली होती है तो मुंगफली का तेल,नारीयल होते है तो नारीयल का तेल,तिल्ली होती है तो तिल्ली का तेल,करडी होती है तो करडी का तेल । तेल सिधे सिधे घानी से निकला हुवा होना चाहिए ।

२. भोजन मे सेंधा नमक का ही प्रयोग करना चाहिए ना की आयोडिन युक्त नमक ।

३. देशी गाय का घी दही को मथकर बनाया गया हो (बिलोना घी) इन बिमारी के रोगीयों के लिए अमृत है ।

४. भोजन मे छिलकेवाली दाले,छिलके सहित सब्जीयाँ,छिलकेवाले चावल,बिना छाना हुआ गेंहू के आंटे का उपयोग करना चाहिये ।

५. क्षारीय (अल्कलाईन) वस्तुओं जैसे आंवला,ॲलोवेरा,गाजर,मूली,चोलाई,सरसो,अदि का प्रयोग इन रोगों मे अत्यंत लाभदायक है । क्षारीय वस्तू माने जिसमे रस ना हो ऐसी वस्तू । नारीयल इसमे पाणी होने के बाद भी यह क्षारीय है ।

६. इन सभी जानकारीयों के बाद भी दिनचर्या का पालन अत्यंत आवश्यक है ।

देशी गाय का घी और उसके अनमोल प्रयोग तथा उपयोग –

१. मासिक स्त्राव मे किसी भी तरह की गडबडी मे ३ चम्मच गरम पाणी मे डालकर पिने लाभ होता है । यह पाणी मासिकस्त्राव वाले दिनों के दौरान ही पिना है ।

२. गाय का घी नाक मे डालने से एलर्जी खत्म हो जाती है । ये दुनिया की सारी दवाईयोंसे तेज असर करती है ।

३. गाय का घी नाक मे डालनेसे कान का पर्दा बिना ऑपरेशन के ठिक हो जाता है ।

४. नाक मे घी डालने से नाक की खुस्की दूर होती है और दिमाग तरों ताजा हो जाता है ।

५. गाय का घी नाक मे डालने से मानसिक शांती मिलती है,याददाश्त तेज होती है,सर्दी जूकाम ठिक होता है।

६. गर्भवती मॉ को गौ मॉ का घी अवश्य खाना चाहिए,इससे गर्भ मे पल रहा शिशु बलवान,धष्टपूष्ट और बुध्दीमान जन्म लेता है ।

७. दो बुंद देसी गाय का घी नाक मे सुबह शाम डालने से मायग्रेन ठिक होता है ।

८. जिस व्यक्ती को बहूत हार्ट ब्लॉकेज की तकलिफ है और चिकनाई युक्त चिजें खाने केलिए मना किया गया हो,तो गाय का घी खाये,हार्टब्लॉकेज दूर होंगे ।

९. देशी घी के प्रयोग से नाक से पाणी बहना,नाक की हड्डीया बढना बंद होता है ।

१०. रात मे अगर आपको निंद नही आती है तो एक नाक मे घी की दो–दो बुंद डाले और हलका खिंचे आपकी आंख ६ घंटे तक नही खुलेगी ।

११.कई लोग है जो रात को सोते समय नाक से संगित निकालते है,इतने जोरदार खर्राटे लेते है की पडोसी सो नही पाता तो उनके नांक मे २–२ बुंद घी डाले ८ दिनों मे खर्राटे बंद हो जायेंगे ।

ब्रेन मलेरीया,टाइफाईड,चिकुनगुनिया,डेंगू,स्वाइन फ्ल्यू और अन्य बुखार –

मित्रों...! आज बहूत सारे बुखार तेजी से भारत देश मे फैल रहे है । करोडों की संख्या मे लोग इससे प्रभावीत हो रहे है,और लाखों की संख्या मे लोग मर भी रहे है । हमेशा की तरह भारत सरकार हाथपर हाथ रखे तमाशा देश रही है । आदरणीय राजीवभाई ने गांव गांव जाकर आयुर्वेदिक दवासे लाखों लोगों को बचाया है, ये दवा बनानकितना आसान है यह आपको बता रहा हूं ।

१. २० तूलसी के पत्ते,नीम की गिलोय या सत ५ ग्राम,सौंठ १० ग्राम,१० छोटी पिपर के टुकडे,सब आपकेघर मे आसानी से उपलब्ध हो जायेंगे । सब एक जगह करणे के बाद एक ग्लास पाणी उबालकर काढा बनाये पाणी जबआधा २५% जल जाये तो उसे चुल्ले से निचे उतारकर ठंडा होने दे । दिन मे तीन बार सुबह–दोपहर–शाम मे तीन बार पियें

२. नीम गिलोय का ज्यूस या काढा डेंगू रोग मे श्वेत रक्तकनिकाये,प्लेट लेटस् कम होने पर तुरंत बढाने मे बहूत ज्यादा काम में आता है ।

३. एक बहूत अच्छी दवा है । हारसिंगार नाम का एक पेड होता है,जिसे संस्कृत या मराठी मे पारीजात कहते है,उसे सफेद फूल और उस फूल की डंडी नारंगी होती है । इस पेड के पत्ते को पथ्थर मे पिस के चटनी बनाये एक ग्लास पाणी इतना गरम करें की पाणी आधा रह जाये । फिर उसे ठंडा होने के बाद रोज सुबह इसे खाली पेट पियो २०–२० साल पुराना गठिया रोग इससे ठिक हो जाता है । यही काढा बुखार भी कम करता है । जो बुखार किसी दवा से ठिक नही होता है इससे ठिक होता है । इनके प्रयोग से आप रोगी की जान बचा सकते है । मात्र इसकी ५ खुराकसे राजीवभाई ने लाखों लाखों लोगों को बुखार से मरने से बचाया था ।

उच्च रक्तचाप की बीमारी के लिए दवा –

उच्च रक्तचाप की बिमारी ठिक करणे के लिए घर मे उपलब्ध कुछ आयुर्वेदिक दवाईया है जो आप ले सकते है । जैसे एक दवा आप के घर में है**दालचिनी** जो मसाले के रुप मे उपयोगी होता है,उसे पथ्थर मे पिसकर पावडर बनाकर आधा चम्मच रोज सुबह खाली पेट गरम पाणी के साथ खाइये या अगर थोडा खर्च कर सकते है तो दालचिनी कोशहद के साथ लिजीये । यह उच्च रक्तचाप के लिए बहूत अच्छी दवा है ।

२. और एक दवा है **मेथी** । मेथी दाना रात को गुनगुने पाणी भिगोये तथा सुबह उठकर मेथी दाने को चबाचबाकर खाये और वो पाणी पिये । बहूत जल्द आपका उच्च रक्तचाप देड से दो महिने मे एकदम स्वाभावीक कर देगा ।

३. और एक दवा है **अर्जुन की छाल** उसे धूप मे सुखाकर पथ्थर पे पिसकर पावडर बनाये । आधा चम्मच पावडर आधा ग्लास गरम पाणी मे मिलाकर उबाले और उबालने के बाद इसको चाय की तरह पी ले । ये उच्चरक्तचाप को ठिक करेगा,कोलेस्ट्रॉल को ठिक करेगा । ट्रायग्लिसराईड को ठिक करेगा । मोटापा कोठिक करेगा । हार्ट के ब्लॉकेज को ठिक करेगा,दूर करेगा । दिल मजबूत हो जायेगा आपका इएसआर ठिक रहेगा।

४. और एक दवा है **लौकी** । लौकी का रस रोज पिना है सबेरे सबेरे खाली पेट,लौकी की रस मे पांच धनिया पत्ता,पांच पुदीना पत्ता,पांच तूलसी पत्ता मिलाकर ३–४ काली मिर्च पिस के लौकी के रस मे डालकर पिना है । यह रक्तचाप ठिक करेगा,ऱ्हदयको मजबूत करेगा,कोलेस्ट्रॉल ठिक रखेगा,डायबीटिज मे काम आयेगा ।

५. और एक दवा है **बेलपत्र** । यह उच्च रक्तचाप मे बहूत काम आते है । ५-१० बेलपत्र को पथ्थर पर पिसकर उसकी चटनी बनाये,उस चटनी को एक ग्लास पाणी मे डालकर खुब गरम किजीये की पाणी आधा रह जाये तो उसे उतार लिजीये । जब पाणी ठंडा हो जाये तो पी लिजीये ये सबसे जल्दी उच्च रक्तचाप को ठिक कर देता है,शुगर को सामान्य कर देगा ।

६. और एक दवा है **देशी गाय का मूत्र** । रोज सुबह सुबह खाली पेट देशी गाय का मूत्र ८ घडी कपडे से छानकर आधा कप पिना है,गोमूत्र उच्चरक्तचाप,शुगर,गठिया और दमा/अस्थमा को भी ठिक कर देता है । इसमे दो सावधानिया ध्यान मे रखनी है वो ये है गाय शुध्द रुप से देशी हो और वो गर्भावस्था में ना हो ।

निम्न रक्तचाप (लो बी.पी.) की बिमारी की दवा -

निम्नरक्तचाप की बिमारी के लिए सब से अच्छी दवा है गुड । ये गुड पाणी मे मिलाकर,सेंधा नमक डालकर निंबू का रस मिलाकर पिये । दिन मे दो-तिन बार पिने से निम्न रक्तचाप सबसे जल्दी ठिक होता है ।

२. और एक दवा है **अनार** । अगर आपके पास थोडे पैसे है तो रोज अनार का रस सेंधा नमक डालकर पिये गन्ने का रस सेंधा नमक डालकर पिये,संतरे का रस सेंधा नमक डालकर पिये,अननस का रस सेंधा नमक डालकर पिये यह निम्न रक्तचाप ठिक कर देगा ।

३. और एक बढिया दवा है **देशी गाय केदूध मे** घी मिलाकर पिये,एक ग्लास देशी गाय का दूध और एक चम्मच देशी गाय का घी मिलाकर रात को पीने से निम्न रक्तचाप बहूत अच्छे से ठिक होगा ।

४.और एक अच्छी और सस्ती दवा है **सेंधा नमक का पाणी** एक ग्लास पाणी आधा चम्मच सेंधा नमक मिलाकर पाणी पिये दिन मे तीन बार,जो गरीब लोग है ये उनके लिए सबसे अच्छी दवा है ।

मधूमेह,शुगर (Diabetes)

आजकल मधुमेह की बिमारी आम बिमारी है । मधुमेह भारत मे ५ करोड ७० लाख लोगों को है और ३ करोड लागों को हो जायेगी अगले कुछ सालों मे सरकार ये कह रही । हर दो मिनट मे एक मौत हो रही है । मधुमेह से कॉम्प्लीकेशन तो बहूत हो रहे है। किसी की किडणी खराब हो रही है,किसी का लीवर खराब हो रहा है,किसी का ब्रेन हॅमरेज हो रहा है,किसी को पॅरालिसीस हो रहा है,किसी को ब्रेन स्ट्रोक आ रहा है,किसी को कार्डियाक अॅटॅक हो रहा है,किसी को हार्ट अॅटॅक आ रहा है,बहूत खतरनाक है ।

मधुमेह या चिनी की बिमारी एक खतरनाक रोग है । रक्त ग्लूकोज स्तर बढा हुवा मिलता है,इन मरिजों मे रक्त कोलेस्ट्रॉल,वसा अवयव के बढने के कारण ये रोग होता है । इन मरीजों मे आंखो,गुर्दो,स्नायु,मस्तिष्क,ऱ्हदय,के क्षतिग्रस्त होने से इनके गंभीर,जटिल,घातक रोग का खतरा बढ जाता है ।

भोजन पेट में जाकर एक प्रकार के इंधन मे बदलता है जिसे **ग्लूकोज** कहते है । यह एक प्रकार की शर्करा होती है । ग्लूकोज रक्तधारा मे मिलता है और शरीर की लाखों कोशिकाओं मे पहुंचता है । अग्नाशय ग्लूकोज उत्पन्न करता है,इन्सूलीन भी रक्तधारा में मिलता है और कोशिंकाओं तक जाता है ।

मधूमेह बिमारी का असली कारण जबतक आप लोग नही समझेंगे आपकी मधूमेह कभी भी ठिक नही हो सकती है जब आपके रक्त मे वसा (कोलेस्ट्रॉल) की मात्रा बढ जाती है तब रक्त में मौजूद कोलेस्ट्रॉल कोशिकाओं के चारो ओर चिपक जाता है और खून मे मौजूद इन्सूलीन कोशिकाओंतक नही पहूंच पाताहै । वो इंस्लूलीन शरीर के किसी भी काम मे नही आता है जिस कारण से शरीर में हमेशा शुगर का स्तर हमेशा ही बढा हुवा होता है । जब हम बहार से इन्सूलीन लेते है तब वो इन्सूलीन नया नया होता है तो वह कोशिकाओंके अंदर पहुंच जाता है । **अब आप समझ गये होंगे की मधूमेह का रिश्ता कोलेस्ट्रॉल से है न की शुगर से** ।

जब आप संभोग के समय पति-पत्नी आपस मे संबंध नही बनाकर रख पाते है या संभोग के समय बहूत तकलिफ होती है समझ जाइये मधूमेह हो चूका है या होनेवाला है,क्योंकी जिस आदमी को मधूमेह होनेवाला हो उसे संभोग के समय बहूत तकलिफ होती है क्यूंकी मधुमेह से पहले जो बिमारी आती वो सेक्स मे प्रॉब्लेम होना,मधूमेह रोग मे शुरू मे तो भूख बहूत लगती है,लेकिन धिरे धिरे भूख कम हो जाती है । शरीर सुखने लगता है,कब्ज की शिकायत रहने लगती है,अधिक पेशाब आना और पेशाब मे चिनी आना शुरु हो जाता है,और रोगी का वजन कम होने लगता है । शरीर मे कहि जख्म/घाव होने पर वह जल्दी नही भरता है ।

तो ऐसी स्थिती मे हम क्या करें ? राजीव भाई की एक छोटीसी सलाह है की आप इन्सूलीन पर ज्यादा निर्भर ना रहे क्योंकी यह इन्सूलीन डायबिटीज से भी ज्यादा खतरनाक है । साईड इफेक्टस बहूत है इसके ।

इस बिमारी का घरेलू उपचार इसप्रकार है ।

यह आयुर्वेद की एक दवा है जो आप घर मे भी बना सकते है ।

१.१०० ग्राम मेथी का दाना २.१०० ग्राम करेले का बिज ३.१५० ग्राम जामुन के बिज

४. २५० ग्राम बेलपत्र ५. १०० ग्राम तेजपत्र

इन सबको धुप मे सुखाकर पथ्थर पे पिसकर पाऊडर बनाकर आपस मे मिला ले यही औषधि है ।

औषधि लेने की पध्दत-

सुबह नाश्ता करने से एक घंटा पहले एक चम्मच गरम पाणी के साथ ले,फिर शामको भोजन करने से पहले एक घंटा पहले ले । अगर ये दवा आप ३ महिने तक लोगे तो आपको मधूमेह मे लाभ होगा । ये औषधी बनाने १००-१५० रु.तक का खर्च आता है और ये औषधी आपको तीन महिने तक चलेगी और आपको लाभ भी होगा ।

सावधानी -

१. शुगर के रोगी ऐसी चिजे ज्यादा खाये जिसमे फायबर हो,रेशे ज्यादा हो,घी-तेलवाली डायट कम हो और फायबर वाली ज्यादा हो रेशेदार चिजें खाये । सब्जीया मे बहूत रेशे होते है वो खाये,डाल जो छिलकेवाली हो वो खाये,मोटा अनाज खाये,फल ऐसे खाये जिसमे रेशा बहूत हो ।

२. चिनी कभी भी ना खाये,डायबिटीज की बिमारी को ठिक होने मे चिनी सबसे बडी रुकावट है । लेकिन आप गुड खा सकते है।

३. दूध और दूध से बनी कोई भी चिज ना खाये । प्रेशर कुकर और ॲल्यूमिनिअम के बर्तन मे भोजन ना बनाये

४. रात का भोजन सुर्यास्त के पूर्व करना होगा ।

जो डायबिटीज आनुवंशीक है वो कभी पूरी ठिक नही होती सिर्फ कंट्रोल होती है उनको ये दवा जिंदगीभर खानी पडेगी, पर जिनको आनुवंशिक नही है उनका मधूमेह पूरा ठिक हो जाता है ।

पथरी (मुतखडा) KIDNEY STONE की चिकीत्सा –

गुर्दे की पथरी चाहे जितनी बडी हो गयी हो ऑपरेशन कराने से बचना चाहिये और पथरी का इलाज होमीओपॅथी अथवा आयुर्वेदिक तरीके से कराना चाहिये ।

आयुर्वेदिक ईलाज – पाषानभेद नाम का एक पौधा होता है । उसे पथ्थरचट भी कहते है । उसके ३/४ पत्तो को पाणी मे उबाल कर काढा बना लें । अब इस कांढे को दिन मे ३ बार १५–२० दिन तक लेना है,आपकी पथरी खत्म हो जायेगी ।

होमीओपॅथी ईलाज – होमीओपॅथी मे एक दवा है उसका नाम है BERBERIS VULGARIS मांगना है, और आगे कहेना की MOTHER TINCHER पोटेंसी (ताकत) मे दे ।

अब इस दवा की १०–१५ बुंदे को एक चौथाई कप गुनगुने पाणी मे मिलाकर दिन मे चार बार (सुबह,दोपहर,शम और रात) ४५ दिन तक लेना है,कभी कभी ६० दिन तक भी लग जाते है ।

इसमे जितने भी स्टोन है,कही भी हो पित्ताशय (Gall Bladder) मे हो या फिर किडणी मे हो,या युनिद्रा के आसपास हो,या मुत्रपिंड मे हो,वो सभी पथरी को तोडकर पिघलाकर निकाल देता है ।

आप २ महिने के बाद सोनोग्राफी करवा लिजीये आपको पता चल जायेगा कितना टूट गया है और कितना रह गया है । अगर रह गया है तो और थोडे दिन दवाई ले,इसका कोई साईड इफेक्ट नही है ।

ये तो हुवा जब पथरी टूट के निकल गई,अब दुबारा भविष्य मे यह ना बने उसके लिए क्या आप पुछोगे ? क्योंकी जिन लागो को पथरी होती है निकलने के बाद भी बार–बार हो जाती है । पथरी टूट के निकल जाये और दुबारा कभी ना हो इसके लिए होमीओपॅथी मे एक दवा है CHINA1000 इस दवा को एक ही दिन सुबह–दोपहर–शाम दो–दो बूंद सिधे जीभ पर डाल दे भविष्य मे कभी पथरी नही बनेगी । मगर यह दवा तब काम करेगी जब पथरी ना हो ।

गठिया (सांधिवात) ARTHRITIS की चिकीत्सा –

दोनो तरह के गठिया मे आप एक दवा का प्रयोग करें जिसका नाम है चूना,वह चूना जो आप पान मे खाते हो गेंहू के दाने बराबर चूना रोज सुबह खाली पेट एक कप दही मे मिलाकर खाना चाहिए,नही तो दाल मे,पाणी मे मिलाकर लगातार ३ महिने तक पिना है या खाना है । गठिया ठिक हो जायेगा । ध्यान रहे पाणी पिणे के समय हमेशा बैठकर घुंट घुंट कर के पिना चाहिए नही तो बिमारी ठिक नही होगी । अगर आप के हाथ या पैर की हड्डी मे कट–कट आवाज आती हो तो वो भी चूना खाने से ठिक हो जायेगी ।

दोनो तरह के गठिया के लिए और एक अच्छी दवा है वो है **मेथी दाना** । एक चम्मच मेथी दाना एक कांच के गिलास मे गर्म पाणी लेकर उसमें डाल दे,उसे रातभर भिगोये । सबेर उठकर पाणी घुंट घुंट करके पिये और मेथी दाना चबा चबाकर खाये । तीन महिने तक लेने से गठिया ठिक हो जायेगा । ध्यान रहे पाणी पिणे के समय हमेशा बैठकर घुंट घुंट कर के पिना चाहिए नही तो बिमारी ठिक नही होगी ।

जोडों का दर्द यदी बहूत पुराना हो,भले २०-३० साल पुराना हो या जब डॉक्टर कहे की घुटने बदलने पेंडो उस समय नुना काम नही करेगा । उसको चुने की जगह हारसिंगार के पत्तों का काढा देना पडेगा । हारसिंगार को पारीजात भी कहते है । इसके ७-८ पत्तो को बारीक पिसकर चटनी जैसा बनाकर एक ग्लास पाणी मे उबाले,पाणी जब आधा रह जाये तब उसे चूल्ले से निचे उतारकर ठंडा करके,सुबह सुबह खाली पेट पी लें । तीन महिने मे यह समस्य बिल्कूल ठिक होगी ।

किसी भी तरह के बुखार होने की स्थिती मे भी यह काढा काम करता है । उस स्थिती मे ७-८ दिन ही देना है । ये औषधी बहूत खास और रामबाण है। इसके साथ दुसरी कोई और दवा ना दे,नही तो तकलिफ होगी। ध्यान रहे पाणी पिते समय हमेशा बैठकर घुंट घुंट ही पिना चाहिये नही तो ठिक नही होगें ।

गंभीर इमरजन्सी चिकीत्सा -

आम लोगों के मस्तिष्क मे यह बात बहूत गहराई तक बैठी हुई है की,गंभीर समयपर(इमरजन्सी) में आयुर्वेद और होमीओपॅथी दवा का कोई नाता नही है,क्योंकी गंभीर इमरजन्सी मे यह नाकाम है,लेकिन यह तथ्य पूर्णत: गलत। कुछ विशिष्ट आयुर्वेद और होमीओपॅथी दवाए गंभीर समयपर फौरण नियंत्रित करणे मे सक्षम है । यहाँ हम ऐसे ही कुछ गंभीर इमरजन्सी और उनकी दवाओं का विवरण दिया है ।

जलना -

आग या किसी गरम चिज से अचानक से जल जाने से शरीर में फफोले पड जाते है । घी,तेल,दूध,चाय,भाप,गरम तवे से जलने से भी फफोले पड जाते है । काफी तेज जलन होती है,कभी कभी फफोले मे मवाद भी आ जाता है । इसके कुछ घरेलू उपाय -

१. यदि किसी व्यक्ती की त्वचा जल गई है तो उसके जले हुए भाग को तुरंत पाणी के अंदर रखे या ठंडे पाणी की धारा जलेभाग पर बहाये । जब जलन शांत हो जाये आलू पिसकर लगाना चाहिए,इससे रोगी की जलन बहूत जल्दी ठिक हो जाती है । शरीर पर किसी भी तरह का घाव होने पर या चोट लग जाने पर पहले गोमूत्र या गर्म पाणी से धोये। गेंद की पंखुडिया,हल्दी और गोमूत्र की चटणी बनाये । बाद मे CALENDULA OFFOCONALLIS (mother Tincher) लगा कर गेंदे के फुल की चटणी लगाये ।

हड्डी टूटना -

एक आम इमरजन्सी है,प्राय वृध्द लोगों मे,बच्चो मे अथवा दुर्घटना आदि के कारण हो सकती है । हड्डी टूटने पर होमिओपॅथी दवा ARNICA 1 M देना है,जो दर्द को दूर करती है । ARNICA 200 की २-२ बूंद हर आधे घंटे मे मे तीन बार देना है । अगर हड्डी टूट गई है तो टूटी हड्डी को पुन: जोडने के लिए अगले दिन एक दाना गेंहू के बराबर चूना दही मे मिलाकर दिन मे एकबार १५ से २० दिन तक लेना है ।

मोच –

सामान्य कार्य के दौरान भारी वजन उठाने से,गलत तरीके से करने से आदि अनेक कारण है,जो मोच के लिए उत्तरदायी हो सकते है,प्राय मोच शरीर के लचिले भागों जैसे कलाई,कमर,पैर आदि को प्रभावीत करती है मोच के लिए होमिओपॅथी दवा है जो ना केवल मोच के दर्द को दूर कर देती है,बल्की सुजन को भी दूर करती है ।

हड्डी टूटने पर उसे पुन: जोडने के लिए अगले दिन से एक दाना गेहूं के बराबर दही मिलाकर दिन मे एकबार १५ से २० दिन तक खाना है ।

शरीर के किसी भी भाग मे बिना रक्त निकले चोट लगने या मुड जाने पर या मार लगने,गिरने पर ARNICA 200 की २–२ बुंद हर आधे घंटे मे तीन बार देना है ।

बच्चों को खलते वक्त चोट लगना,काम करते समय मामूली चोट या कट लगना अथवा वाहन से मामूली दुर्घटना होना । ये सभी सामान्य चोट के अंतर्गत आते है ऐसे समय मे कुछ उपयोगी होमीओपॅथी दवाए न केवल कटे हुवे घाव भरने,रक्तस्त्राव रोकने मे उपयोगी है,बल्की ये दर्द को भी कम कर देती है ।

शरीर के किसी भी भाग मे बिना रक्त निकले चोट लगने या मुड जाने पर या मार लगने,गिरने पर ARNICA 200 की २–२ बुंद हर आधे घंटे मे तीन बार देना है ।

शरीर पर चोट लगने से खून बहने पर होमीओपॅथी की दवाHYPERICUM PERFORATUM 200 की २–२ बुंद हर आधे घंटे मे तीन बार,अगर चोट ज्यादा है और खून बह रहा है तोHYPERICUM 1M १–१ बुंद हर आधे घंटे मे तीन बार देना है ।

सांप के काटने पर चिकित्सा –

सांप काटने पर NAJA 30 हर १० मिनीट मे २–२ बूंद तीन बार देना है । अगर ठिक हो रहा है,तो इसी को चालू रखना है । अगर समय ज्या हो गया हो या कोई फर्क नही है तो NAJA 200 २–२ बूंद हर १० मिनट मे तीन बार देना ठिक होने पर कोई दवा नही देना है ।

अगर NAJA 200 से भी ठिक नही है तो NAJA 1M की २ बूंद आधा कप पाणी मे डालकर एक चम्मच हर आधे घंटे मे तीन बार पिलाना है । अगर इससे भी ठिक ना हो तो NAJA 10M की आधा कप पाणी मे एक चम्मच एक ही बार पिलाना है जब कंट्रोल मे आये तो गर्म पाणी या मूंगदाल का उबाला हुवा पाणी देना है । खाना अगर देना है तो थोडी मूंगदाल की खिचडी दे सकते है ।

बिच्छू,मधूमख्खी के काटनेपर सुई या कांटा लगने की चिकित्सा –

बिच्छू के काटने पर बहूत दर्द होता है,जिसको बिच्छू काटता है उसके सिवा और कोई जान नही सक्ता कितना भयंकर कष्ट होता है । तो बिच्छू काटने पर एक दवा है और उसका नाम हैSILICEA 200 इसका लिक्वीड ५ एमएल.घर मे रखे । बिच्छू काटने पर इस दवा को जीभ पर एक बूंद १०–१० मिनट के अंतर पर तीन बार देना है । बिच्छू जब काटता है,तो उसका जो डंक है उसको अंदर छोड देता है,वो ही दर्द करता है । इस डंक को बाहर निकालना आसान काम नही है । डॉक्टर के पास जायेंगे वो काटके चिरा लगायेगा फिर खिंच के निकालेगा । उसमे खून भी बहेगा और तकलिफ भी होगी । ये दवाई इतनी बेहतरीन है की,आप इसके तीन डोज देंगे १०–१० मिनट पर १–१ बूंद और आप

देखेंगे कि वो डंक अपने आप निकल कर बाहर आयेगा । सिर्फ तीन डोज मे आधे घंटे मे आप रोगी को ठिक कर सकते है । बहूत जबरदस्त दवाई है ये SILICEA 200 ।

यह दवाई और भी बहूत काम आती है । अगर आप सिलाई मशीन मे काम करते हो और आपको कभी-कभी सूई चूभ जाती है और टूट जाती है । उसी समय आप ये दवाई ले लिजीये । ये सूई को भी बाहर निकाल देगी । आप इस दवाई को और भी कई परिस्थितियों मे ले सकते है,जैसे कांटा लग गया हो,कांच घुंस गया हो,ततैया ने काट लिया हो,मधुमक्खी ने काट लिया हो ये सब जो काटनेवाले अंदर जो छोड देते है उन सब के लिए आप इसको ले सकते है। बंदूक की गोली लगने पर गोली को बाहर निकालने के लिए भी इसका इस्तेमाल कर सकते है । बहूत तेज दर्द निवारक है और जो कुछ अंदर छूटा हुवा है उसको बाहर निकालने की दवाई है बहूत सस्ती दवाई है । ५ मिली.सिर्फ १० रु.की आती है । इससे कम से कम ५० से १०० लोगों का भला हो सकता है ।

पागल कुत्ते के काटने पर चिकित्सा –

अगर घरेलू कुत्ता कोटे तो कोई दिक्कत नही है पर पागल कुत्ता काटे तो समस्या है । सडकवाला कुत्ता काटले तो आप जानते हि नही,उसको इंजेक्शन दिया हुवा है या नही,उसने काट लिया तो आप डॉक्टर के पास जायेंगे फिर वो १४ इंजेक्शन लगायेगा । वो भी पेट मे लगाता है,उससे बहूत दर्द होता है और खर्च भी हो जाता है । कम सेकम ५००० तक । गरीब आदमी के पास वो भी नही है ।

कुत्ता कभी भी काटे,पागल से पागल कुत्ता काटे घबराइये मत,चिंता मत करिये,बिल्कूल ठिक होगा वो आदमी. बस उसको एक दवा दे दिजीये । उस दवा का नाम है HYDROPHOBINUM 200 और इसको १०-१० मिनिटपर जूबान के उपर ३ ड्रॉप डालना है । कितना भी पागल कुत्ता काटे आप ये दवा दे दिजीये । और भूल जाइयेकी,कोई इंजेक्शन लगाना है । इस दवा को सुरज की धूप और रेफ्रिजरेटर से बचाना है । रेबीज सिर्फ पागल कुत्ता काटने से ही होता है ,पर साधारण कुत्ता काटने से रेबीज नही होता । आवारा कुत्ता अगर काट दिया है तो राजीव भाई के अनूसार आप आपना मन का वहम दूर करणे के लिए ये दवा दे सकते है । लेकिन उससे कुछ नही हो सकता ये हमारा मन का वहम है,जीससे हम परेशान रहते है,और कुछ डर डॉक्टरोंने बिठा रखा है की,इंजेक्शन तो लेना ही पडेगा । आपने शरीर मे थोडे बहूत RESISTANCE सबके पास है,अगर कुत्ते के काटने से उनकी लार ग्रंथी के कुछ वायरस चले भी गये है तो उनको खतम करणे के लिए हमारे रक्त मे काफी कुछ है,और वो खतम कर ही देता है । लेकीन मन मे यह भय बिठा दिया है,शंका हो जाती है हमको,यकीन नही होता जब तक २०,०००/- या ५०,०००/- खर्च कर नही लेते । ये उस समय राजीवभाई ये दवा लेने की बात कहि है,और इसका १-१ ड्रॉप १०-१० मिनीट मे जीभ पर ३ बार डाल देना है । ३० मिन्ट मे यह दवा सब काम कर देगी । कई बार कुत्ता घर के बच्चों के साथ खेलता है और गलती से उसका कोई दांत लग गया तो आप उस जख्म मे हल्दी लगा दिजीये पर साबून से उस जख्म को बिल्कूल ही मत धोये,वो पक जायेगी । हल्दी ANTIBIOTIC,ANTIPYRETIC,ANTITITETANATIC,ANTIINFLAMMATORY है ।

टिटनेस (धनुर्वात) –

लोहे की जंग लगी वस्तु से चोट लगाने पर या वाहन से दुर्घटना होने पर टिटनेस का खतरा पैदा हो जात है जो जानलेवा भी साबीत हो सकता है । होमीओपॅथी मे टिटनेस के लिए दोनो विकल्प मौजूद है –

१. चोट लगने पर फौरन ली जाने वाली दवाई ताकि भविष्य मे टिटनेस की संभावना न रहे ।

२. टिटनेस हो जाने पर उसे आगे बढने से रोकने तथा उसके उपचार हेतू ली जानेवाली दवाई । जैसे HYPERICUM शरीर पर चोट लगनेसे खुन बहने पर होमिओपॅथी की दवा HYPERICUM 200 2-2 बूंद हर आधे घंटे से तीन बार देना है । अगर चोट ज्यादा है और खुन बह रहा है तो HYPERICUM 1MM 1-1 बूंद हर आधे घंटे मे तीन बार देना है । अगर सिर पर बहूत चोट हो और सिर से बहूत खून बह रहा हो तो HYPERICUM 10MM,50M,1CM ताकत की दवाई देनी होगी ।

शरीर पर किसी भी तरह का घाव बहूत गंभीर चोट –

कुछ चोट लग जाती है,और कुछ बहूत गंभीर हो जाती है । जैसे कोई डाईबेटीक पेंशंट है चोट लग गयी है तो उसका सारा दुनिया जहां एक ही जगह है क्योंकी जल्दी ठिक ही नही होता । और उसके लिए कितना भी चेष्ट करें डॉक्टर, हर बार उसको सफलता नही मिलती और अंत मे वो धीरे धीरे गँगरीन (अंग का सड जाना) मे बदलाव होता है और फिर काटना पडता है,उतने हिस्से को शरीर से निकालना पडता है । ऐसी परिस्थिती मे एक औषधी है जो गँगरीन को भी ठिक करती है और OSTOMELITIS (अस्थिमज्जा का प्रदाह) को भी ठिक करती है ।

गँगरीन माने अंग का सड जाना,जहाँ पर नई कोशिका विकसीत नही होती । ना तो मांस मे और ना ही हड्डी मे, और सब पुरानी कोशिकायें मर जाती है । इसी का एक छोटा भाई है OSTOMELITIS (अस्थिमज्जा का प्रदाह) मे भी कोशिका कभी पुर्नजीवीत नही होती,जिस हिस्से मे होता है वहाँ बहूत बडा घाव हो जाता है और वो ऐसा सडता है की डॉक्टर कहता है की,इसको काट के ही निकालना है और कोई दुसरा उपाय नही है । ऐसी परिस्थिती मे जहाँ शरीर का कोई अंग काटना पड जाता हो,या पडने की संभावना हो,घाव बहूत हो गया हो उसके लिए आप एकऔषधी आपने घर मे तयार कर सकते है ।

औषधी है देशी गाय का मूत्र ८ घडी कपडे से छान कर हल्दी,गेंदे के फूल की पिली,नारंगी पंखुडीया निकालना है, फिर उसमे हल्दी डालकर गोमूत्र डालकर उसकी चटनी बनानी है । अब चोट कितनी बडी है उसकी साईजके अनुसार गेंदे के फुल की संख्या तय करणी होगी । इसकी चटणी बनाकर इस चटणी को लगाना है जहाँ पर भी बाहर से खुली हुई चोट है जिससे खून निकल रहा है और ठिक नही हो रहा है । इसको दिन मे दो बार लगाना है उपर से रुई की पट्टी बांध दिजीये ताकी उसका असर बाँडी पर रहे और शाम को दुबारा लगायेंगे तो पहलेवाला धोना पडेगा तो उसे गोमूत्र से ही धोना है । डेटॉल का प्रयोग नही करणा है । गाय के मूत्र को ही डेटॉल की तरह प्रयोग करें । धोने के बाद फिर चटणी लगा दे ।

यह इतना प्रभावशाली है की,आप सोच नही सकते,चमत्कार जैसा लगेगा । इस औषधी को हमेशा ताजा बनाकर लगाना है । किसी का भी जख्म किसी भी औषधी से ठिक नही हो रहा है तो यह लगाये । सोरायसीस मे भी इसे लगा सकते है । ॲक्सीडेंट के केस मे खूब प्रयोग होता है क्यूंकी ये लगाते ही खून बंद हो जाता है । गिले एक्झीमा मे यह औषधी बहूत काम करती है । जले हुवे जख्म पे भी काम करती है ।

हार्ट अॅटॅक (ऱ्हदयघात) –

हार्ट अॅटॅक जैसी गंभीर इमर्जेंसी मे होमिओपॅथी दवा ACONITE- 200 की 2-2 बूंद हर आधे घंटे मे तीन बार देना है । अगर आपने इतना भी कर दिया तो रोगी की जान बच जायेगी,आगे रोगी को कही भी हॉस्पिटल मे ले जाने की कोई जरूरत नही पडेगी । कभी कभी तो ऐसी भी हालत होती है की रोगी हॉस्पीटल पहुंचने से पहले रास्ते मे ही दम तोड देता है,क्योंकी हार्ट अॅटॅक के रोगी को फौरन देखभाल तथा उपचार की जरुरत होती है ।

ये दवा केवल आदमी की जान बचाने के लिए काम आती है अगर आपको आगे हार्ट के ब्लॉकेज को दूर करणा है तो आगे आप ऱ्हदय ब्लॉकेज आर्टिकल पर जाकर पूरे इलाज को पढ सकते है,ये दवाई केवल जान बचाने के लिए है क्योंकी इमरजेन्सी मे ऱ्हदय ब्लॉकेज जब तक दूर होगा तब तक अगर बिच मे कभी हार्ट अॅटॅक आता है ते जान बचाने के लिए ये दवा काम आती है । गॅरंटी से ठिक हो जायेगा ये दवा ACONITE- 200 खरीद कर अपने घर मे रख ले

डायरीया,उल्टी या दस्त होने पर –

NUX VOMICA - 200 २–२ बूंद दिन मे तीन बार सुबह,दोपहर,शाम को २–३ दिन चालू रखना है । हार्निया के लिए NUX VOMICA 1MM १–१ बूंद दिन मे तीन बार प्रत्येक एक एक घंटे से फिर आगे १५ दिन तक लेनी है

ॲपेंडीक्स होने पर –

NUX VOMICA - 200 रात के भोजन के एक घंटे बाद २ बूंद,फिर ३ दिन बाद २ बूंद (१० बार तक ले सकते है) और NUX VOMICA - 30 रोज रात को एक बूंद । SULPHAR - 200 हप्ते मे एक दिन सुबह–दोपहर–शाम १–१ बूंद दिन मे तीन बार । **नोट – अस्थमा के मरीज को कभी भी सल्फर नही देना ।**

स्वप्नदोष होने पर –

NUX VOMICA - 200 रात को सोते समय २ बूंद हर तीन दिन बाद फिर से ले सकते है । रोज नही ।

पिलीया (कावीळ) हेपाटाईटीस A,B,C,D,E होने पर –

१. गेंहू के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस के साथ पान मे लगाकर दिन मे एक बार १०–१२ दिन तक लेना है ।
२. पिलीया होने पर NUX VOMICA - 30 २–२ बूंद दिन मे तीन बार १०–१२ दिन तक लेना है ।
३. BERBERIS VULGARIS (Mother Tincher) की १०–१५ बूंदे एक चौथाई कप गुनगुने पाणी मे मिलाकर दिन मे चार बार लेना है ।

बवासीर,फिशर,भगेंदर होने पर –

१. एक केले को बीच से चिरा लगाकर कपूर बीच मे रख दे फिर इसे खाये इससे बवासीर एकदम ठिक हो जायेगा साथ मे देशी गाय का मूत्र भी पियें ।
२. अगर रोग बढ गया है तो आपको साथ मे ये होमीओपॅथी दवा भी खाना है । -NUX VOMICA - 30 रोज रात को एक बूंद। – SULPHAR 200 हप्ते मे एक दिन सुबह–दोपहर–शाम १–१ बूंद दिन मे तीन बार

गंभीर लकवा होने पर,रोगी की शरीर मे सुन्नता,छुने पर कोई संवेदना नही होना,नसो मे जकडन PARALYSIS –

नसों मे जकडन और पक्षाघात या PARALYSIS मे एक दवा का नाम है,RHUSTOX-30 जिस दिन पक्षाघात आता है रोगी को १५–१५ मिनट पर तीन बार २–२ बूंद मुंह मे दे और इसी RHUSTOX-30 को लगातार करते हुवे रोज सुबह–दोपहर–शाम दे साथ मे एक और दवा हैCAUSTICUM -1M जिस दिन RHUSTOX-30 दिया दुसरे दिन CAUSTICUM -1M की २–२ बूंद तीन बार दे और CAUSTICUM -1M को RHUSTOX-30 के आधे घंटे बाद देना है। ये RHUSTOX-30 रोज की दवाई है । पर CAUSTICUM -1M हफ्ते मे एक दिन २–२ बूंद तीन बार सुबह–दोपहर–शाम देनी चाहिए। ऐसे करके पक्षाघात के रोगी को दवा देंगे तो कोई एक महिने मे ठिक हो जायेगा ,तो कोई १५–२० दिन में ठिक हो जायेगा । किसी को ४५ दिन लगेंगे और ज्यादा तर दो महिने से ज्यादा नही लगेंगे ठिक होने मे । अगर किसी को PARALYSIS आने के १५ दिन या एक महिने बाद से दवा दिया जाये तो वो रोगी तीन महिने मे ठिक हो जाते है तीन महिने से ज्यादा समय नही लगता ।

कॅन्सर (कर्करोग) –

कँन्सर बहूत तेजी से बढ रहा है इस देश में । हर साल २० लाख लोग कँन्सर से मर रहे है । और हर साल नए केस आ रहे है और सभी डॉक्टर हाथ–पैर डाल चूके है ।

राजीवभाई की एक छोटी सी विनती याद रखना की,...कँन्सर के मरीज की कँन्सर से मृत्यू नही होती है बल्की जो ईलाज कॅन्सर के लिए दिया जाता है,उससे मृत्यू होती है । मतलब कँन्सर से ज्यादा खतरनाक कँन्सर का ईलाज है, **ईलाज क्या है ? यह आप सभी जानते है...केमोथेरपी,रेडीयोथेरपी,कोबाल्ट थेरपी दिया जाता है ।**

इसमे क्या होता है की शरीर की जो प्रतिरक्षक शक्ति है वो बिल्कूल खत्म हो जाती है । जब केमोथेरपी दि जाती है,ये बोल कर कि हम कँन्सर के सेल को मारना चाहते है तो अच्छे सेल भी उसी के साथ मर जाते है । राजीव भाई के पास कोई भी रोगी जो केमोथेरपी लेने के बाद आया उसे वो बचा नही पाये । लेकीन उसका उल्टा भी रिकॉर्ड है....राजीव भाई के पास बिना केमोथेरपी लिया हुवा कोई भी रोगी आया दूसरी या तिसरी स्टेज तक वो एक भी नही मरा ।

मतलब क्या है ईलाज लेने के बाद जो खर्च आपने कर दिया वो तो मर ही गया और रोगी भी आपके हाथ से गया । डॉक्टर आपको भूल भूलैया मे रखता है अभी ६ महिने मे ठिक हो जायेगा,८ महिने मे ठिक हो जायेगा लेकिन वो अंत मे जाता ही है । आपके घर परिवार मे अगर किसी को कँन्सर हो जाये तो ज्यादा खर्चा मत करिए,जो खर्च आप करेंगे उससे मरीज का इतना हाल होता है,इतना कष्ट होता है की आप कल्पना नही कर सकते ।

उसको जो इंजेक्शन दिये जाते है,जो गोली खिलाई जाती है,जो केमोथेरपी दी जाती है,उस रोगी के सारे बाल उड जाते है,शरीर पर कहि पर भी बाल नही दिखाई देते,उसकी भोवों के बाल उड जाते है,चेहरा इतना डरावना लगता है की पहचान मे नही आता ये अपना आदमी है । इतना कष्ट क्यो दे रहे हो उसको ? सिर्फ इसिलीए की आपको अहंकार है की आपके पास बहूत पैसा है,तो ईलाज करा के ही मांनना ।आप आपनी आस पडोस की बाते ज्यादा मत सुनिये क्योंकी,आजकल हमारे रिश्तेदार बहूत भावनात्मक शोषण करते है । घर मे किसी को गंभीर बिमारी हो गयी तो जो रिश्तेदार है वो पहले आके कहते है, ऑल इंडिया नही ले जा रहे हो ? पीजीआई नही ले जा रहे हा ? टाटा हॉस्पीटल मे नही ले जा रहे हो ? आप कहोगे नही ले जा रहे है ...अरे तूम बडे कंजूस आदमी हो बाप के लिए इतना भी नही कर सकते,माँ के लिए इतना भी नही कर सकते । ये बहूत खतरनाक लोग होते है । हो सकता है कई बार वो मासूमियत

के साथ कहते हो,उनका मकसद खराब नही होता हो लेकिन उनको जानकारी कुछ भी नही है,बिना जानकारी के वो सलाह देते है और कई बार अच्छा खासा पढा लिखा आदमी फसता है । रोगी को भी गवांता है और पैसा भी ।

कँन्सर के लिए क्या करें ? हमारे घर में कँन्सर के लिए एक बहूत अच्छी दवा है...हल्दी ...! अब डॉक्टरों ने मान लिया है पहले तो वे मानते भी नही थे मगर अब मानने लगे है । हल्दी कँन्सर ठिक करणे की ताकत रखती है । हल्दी मे एक केमीकल है उसका नाम करक्यूमिन और ये ही कँन्सर सेलों को मार सकता है, बाकी कोई केमिकल बना नही इस दुनिया मे और ये भी आदमी ने नही भगवान ने बनाया है । हल्दी जैसा करक्यूमिन और एक चिज मे है वो है देशी गाय का मूत्र । गोमूत्र जो आठ परत सुती कपडे से छान लिया गया हा । देशी गाय का मूत्र और हल्दी आपके पास हो तो आप कँन्सर का इलाज असानी से कर पायेंगे । अब देशी गाय का मूत्र आधा कप और आधा चम्मच हल्दी तथा आधा चम्मच पूनर्नवा पाऊडर तीनों को मिलाके गरम करना है जब उबाल आये उसको ठंडा कर लेना है । कमरे के तापमान मे आने के बाद रोगी को चाय की तरह पिलाना है ...चुस्किया ले ले कर,सिप सिप करके पियें इसका परिणाम अच्छा आयेगा ।

इस दवा मे सिर्फ देशी गाय का मूत्र ही काम मे आता है जर्सी का मूत्र कुछ काम नही आता । और देशी गाय काले रंग की हो उसका मूत्र सबसे अच्छा परिणाम देता है इन सब में । इस दवा को (देशी गाय का मूत्र,हल्दी,पुनर्नवा) सही अनूपात मे मिला के उबाल के ठंडा करके कांच के पात्र मे स्टोअर करके रखिए पर बोतल को कभी फ्रिज मे मत रखिये । ये दवा कँन्सर के सेकंड स्टेज मे और कभी कभी थर्ड स्टेज में भी बहूत अच्छे परिणाम देती है । जब स्टेज थर्ड क्रॉस करके चौथी स्टेज मे पहूंच जाये तब परिणाम मे सफलता की प्रतिशतता थोडी कम हो जाती है । अगर आपने किसी रोगी को केमोथेरपी दे दिया तो फिर इसका कोई असर नही आता । कितना भी पिला दो कोई परिणाम नही आता । आप अगर किसी रोगी को ये दवा दे रहे है तो उसे पूछ लिजीये कहि केमोथेरपी शुरू तो नही हो गयी ? अगर शुरू हो गयी है,तो आप उसमे हाथ मत डालीये,जैसा डॉक्टर करता है करणे दिजीये,आप भगवान से प्रार्थना किजीये उसके लिए...इतना ही करें । और अगर केमोथेरपी शुरू नही हुई है और उसने कोई ॲलोपॅथी ईलाज शुरू नही किया है तो आप देखेंगे इससके चमत्कारीक परिणाम आते है । ये सारी दवाई काम करती है । हल्दी को छोडकर गोमूत्र और पुनर्नवा शरीर की जीवनी शक्ति है (VITALITY) उसका सुधार करती है और जीवनी शक्ति के ताकतवर होने के बाद हल्दी कँन्सर के सेलों को खत्म करती है ।

ये तो बात हूवी कँन्सर चिकित्सा की पर जिंदगी में कँन्सर आये ही ना ये और भी अच्छा है ।
तो जिंदगी में आपको कभी कँन्सर ना हो उसके लिए एक बात याद रखिए । आप भोजन बनानें मे जो तेल इस्तेमाल करते है वो रिफाइंड तेल या डालडा ना हो । ये देख लिजिए दूसरा जो भी भोजन ले रहे है उसमे रेशेदार भोजन का हिस्सा ज्यादा हो,जैसे छिलके वाली दाले,अनाज,सब्जीया,चावल लेना ।

तो आप निश्चिंत रहें आपको कभी कँन्सर नही होगा ।

कँन्सर के बारे मे सारी दुनिया एक ही बात कहती है चाहे वो डॉक्टर हो,विशेषज्ञ हो,या वैज्ञानिक हो कि इससे बचाव ही इसका उपाय है । महिलाओं मे आजकल बहूत कँन्सर हो रहे है । गर्भाशय का,स्तन का ये काफी तेजी से बढ रहा है । पहले गाठ (टयूमर) होती है फिर वो कँन्सर मे बदल जाता है । माताओं बहनों कों क्या करणा है की जिंदगी मे कभी (टयूमर) ही ना आए ।

आप के लिए सबसे अच्छा बचाव का काम है जैसे ही आपके शरीर के किसी भी हिस्से में किसी रसौली गाठ का पता चले तो सावधान हो जाईये । जैसे की सभी गांठे रसोली कँन्सर की नही होती है । २-३ प्रतिशत ही कँन्सर मे बदलती है । लेकिन आप के पास इस रसौली या गाठ को ठिक करने की दुनिया की सबसे अच्छी दवा है**चूना** । चूना वही जो आप पान मे खाते है । गेंहू के दाने बराबर चूना रोज खाईये दही मे मिलाकर,छाछ मे मिलाकर,गन्ने के रस मे मिलाकर,अनार के रस मे मिलाकर,दाल मे मिलाकर,मठ्ठा मे मिलाकर,लस्सी मे मिलाकर,सब्जी में मिलाकर,पाणी मे मिलाकर पिये या खाये । अधिक से अधिक ३ महिने तक ।

ध्यान रहे की पथरी(मुतखडा) के रोगी को चूना नही खाना है ।

स्त्री रोग (ल्यूकोरिया,रक्त पदर,मासिक धर्म की अधिकता,अनियमितता) -

अशोक वृक्ष के ४-५ पत्ते, १ ग्लास पाणी लिजीए,उसे सुबह बर्तन मे रखकर उबाले,जबतक कि वो आधा बचे ,फिर ठंडा करके पी लिजीए और पत्तों को चबाकर खा लिजीये (इसे छानना नही है) ऐसा लगातार एक महिने तक करणा है अगर एक महिने मे पूरा ठिक ना हुवा या लाभ कम हो तो फिर से एक महिने और दवा लेनी पडेगी ।

मासिक धर्म के काल में अधिक रक्तस्राव,अनियमित मासिक धर्म,ल्यूकोरिया,बदबूदार मासिक धर्म,बवासीर,रजो निवृत्ती के समय ये काढा पी सकते हो । शरीर मे कहि दर्द हो तो,मासिक धर्म के समय होनेवाली किसी भी समस्या के लिए ये रामबाण और अचूक औषधी है ।

मासिक स्राव मे किसी भी अगर बहूत तकलीफ हो रही हो तो (ये कमर दर्द,स्तनों मे दर्द,पेट मे दर्द और चक्कर आना (जो की मासिक धर्म के समय पर होती है) होने वाली किसी भी समस्या के लिए ये रामबान और अचूकऔषधी है । २५० ग्राम गरम पाणी मे घी पिघला हो तो तीन चम्मच,जमा हूवा है तो एक चम्मच,डालकर पिने से लाभ होता है । यह पाणी मासिक स्राववाले दिनों के समय ही पिना है ।

असली अशोक के पौधे का ही इस्तेमाल करें नकली अशोक का लाभ (रिजल्ट) नही आयेगा ।

असली अशोक वृक्ष

नकली अशोक वृक्ष

गर्भावस्था –

जब कोई मॉ गर्भावस्था मे है तो चूना रोज खाना चाहिए क्योंकी गर्भवती माँ को सबसे ज्यादा कॅल्शीयम की जरूरत होती है और चूना कॅल्शीयम का सबसे बडा भंडार है । गर्भवती माँ को चूना खिलाना चाहिए अनार के रस में,अनार का रस एक कप और चूना गेंहू के दाने बराबर ले उसे अनार के रस मे घोलकर रोज पिये । अगरयही नौ महिने लगातार पिते है,तो इसके जबरदस्त चार फायदे होंगे १. मॉ को बच्चे के जनम के समय कोई तकलिफ नही होगी और नॉरमल (नैसर्गीक) डिलेवरी होगी । २. बच्चा जो जनम लेगा वो बहूत धष्ट-पुष्ट और तंदूरूस्त होगा । ३. वो बच्चा जिंदगी मे जल्दी बिमार नही पडता,जिसकी मॉ ने चूना खाया हो । ४. सबसे बडा लाभ वो बच्चा बहूत होशियार और बुध्दीमान होगा,उसका आयक्यू लेवल बहूत अच्छा होगा ।

बच्चे का पेट मे उलटा होना –

यह एक बहूत ही गंभीर स्थिती है जिससे अधिकांश महिलाए प्रसव के समय गुजरती है । अपने विकास काल के समय कभी-कभी शिशु गर्भाशय मे आडा या उल्टा हो जाता है.यह स्थिती माता और शिशु दोनों केही जीवन के लिए खतरनाक हो सकती है । होमिओपॅथी मे एक दवा है जो इस प्रकार के आपात अवस्था मे देने पर फौरन गर्भ मे शिशु की स्थिती को भी पुन: सही कर देती है जिसका नाम है PULSATILA 200

प्रसव मे समस्या –

प्रसव मे देरी होने पर या गर्भ मे पल रहे बच्चे का आडा या उल्टा होने की सबसे अच्छी दवाई है देशी गाय का गोबर और गोमूत्र । डॉक्टर कितना भी चिल्लाये ऑपरेशन करना पडता है,तब भी आप अपने गर्भावस्था मॉ को घर ले आओ । उसे किसी बछडी का गोबर और गोमूत्र लेकर उसे आपस मे मिलाइये और उसका रस निकल कर माँ को ४-४ घंटे के अंतर मे ३ बार पिला दिजीये पेट के अंदर का बच्चा भी सिधा हो जायेगा और बिना किसी तकलिफ और दर्द के बच्च बडे आराम से बाहर आयेगा । लेकिन यह दवा ९ महिना पूरा होने के बाद होने वाले प्रसव मे ही काम आती है । उससे पहले अगर ये बच्चा ७-८ महिने मे होता है तो ये दवा इतना काम नही आती है ।

ये दवा रुकी हुवी प्रसव पिडा को पुन: प्रारंभ करती है,शिशु जनम को सरल बनती है,तथा गर्भ मे शिशु की स्थिती को पुन: सही कर देती है ।

दमा,अस्थमा,ब्रोन्कियल अस्थमा –

छाती की कुछ बिमारीया जैसे दमा,अस्थमा,ब्रोन्कियल अस्थमा,टिबी इनकी सबसे अच्छी दवा है

- **गाय का मूत्र** – आधा कप देशी गाय का गोमूत्र सुबह पीने से दमा,अस्थमा,ब्रोन्कियल अस्थमा,टिबी सब ठिक होता है । लगातार ५-६ महिने पिना पडता है ।

- **दमा अस्थमा** – की और एक अच्छी दवा है । दालचिनी,इसका पाऊडर रोज सुबह आधे चम्मच खाली पेट गुड या शहद मिलाकर गरम पाणी के साथ लेने से अस्थमा ठिक कर देती है ।

टिबी – के लिए डॉटस का जो इजाज है गोमूत्र के साथ उसका असर २०–४० गुणा तक बढ जाता है ।
आधा कप देशी गाय का गोमूत्र सुबह पिने से टिबी ठिक हो जाती है । लगातार ५–६ महिने पिना पडता है ।

गले मे कोई इन्फेक्शन,टॉन्सील –

गले मे कितनी भी खराब बीमारी हो,कोई भी इन्फेक्शन हो,इसकी सबसे अच्छी दवा है हल्दी । जैसे गले मे दर्द है,खरास है,गले मे खांसी है,गले में कफ जमा है,गले मे टॉन्सील हो गया ये सब बिमारीओं मे आधा चम्मच कच्ची हल्दी का रस लेना और मुंह खोल कर गले मे डाल देना,और फिर थोडी देर चूप होकर बैठ जाना तो ये हल्दी गले मे निचे उतर जायेगी लार के साथ और एक खुराक मे ही सब बिमारी ठिक होगी दुबारा डालने की जरूरत नही । ये छोटे बच्चो को तो जरूर करना ये बच्चो के टॉन्सील जब बहूत तकलिफ देते है ना तो हम ऑपरेशन करवाकर उनको कटवाते है वो करने की जरूरत नही है,हल्दी से सब ठिक होता है ।

हाइपरथाइराडिज्म (थायरॉईड) –

हायपरथाइराडिज्म,हाईपोथायरायडिज्म दोनो प्रकार के थाइरॉईड का उपचार धनिया से पूरी तरह से इलाज किया जा सकता है । थाइरॉईड के लिए धनिया चटनी बनाकर दिन मे २ बार उपयोग करें और जिन लोगो का थाइरॉईड के कारण वजन या मोटापा बहूत बढा हुवा है उन लोगों का मोटापा भी इसी से कम होगा ।

थाइरॉईड के सभी मरीजों के लिए आयोडिन युक्त नमक जहर के समान होता है,थाइरॉईड के सभी मरीजेां को सबसे पहले आयोडिन नमक छोडकर उसकी जगह सेंधा नमक या काला नमक का ही प्रयोग करना चाहिए,क्योंकी थायराईड भारत मे आज जितने भी लोगों को है उनका प्रमुख कारण है आयोडिन युक्त नमक,भारत मे आज आयोडिन की कमी किसी को भी नही है,लेकिन सरकार जबरदस्ती ये नमक भारत के सभी लोगों को खिला रही है ।

खाने मे हमेशा सेंधा नमक का ही प्रयोग करना चाहिए,ना की आयोडिन युक्त नमक का । चिनी की जगह गुड,देशी खांड या धागे वाली मिस्त्री का प्रयोग कर सकते है ।

गोमूत्र-दूध-घृत के गुण –

राजीवभाई ने १२ साल परीक्षण के बाद ऐसा कहाँ है की,हमारे शरीर की ४८ बिमारीया ऐसी बिमारीया है के गाय के मूत्र से ठिक हो जाती है । गोमूत्र माने देशी गाय का (जर्सी नही) शरीर से निकला हुवा सिधा साधा मूत्र जिसे सुती के आठ परती कपडों से छान कर लिया गया हो ।

२. गोमूत्र वात और कफ को अकेला ही नियंत्रित कर लेता है । पित्त के रोगों के लिए इसमे कुछ औषधिया मिलाइ जाती है ।

३. आधा कप देशी गाय का गोमूत्र सुबह पिने से टयूबर कोलायसीस,डायबिटिज,अर्थराईटिस,ऑस्टी आर्थराईटीस, ब्रॉन क्लियर,निमोनिया,दमा,अस्थमा,ब्रोन्कियल अस्थमा,ऐसी ४८ बिमारीया गोमूत्र पिने से जड से ठिक हो जाती है,बस लगातार ५–६ महिने पिना पडता है ।

४. गोमूत्र मे पाणी के अलावा करक्यूमिन,पोटॅशिअम,कॅल्शीयम,मेग्नॉशियम,क्लोराईड,फ्लोराईड,स्फूरद, नत्र, पातश, फॉस्परस,अमोनिया,क्रियेटीनीत,अमोनिया ॲसिड,लोह,सल्फर,ताप,सुवर्णक्षार,लॅक्टोज,नायट्रोजन, फॉस्परस, पोटॅशियम,

जस्त,बोरॉन,बोरॉक्स,कोबाल्ट सफेद,चूना,गंधक,सोडियम,केरोटिन,एमएचडीआय,जैसे १८ सुक्ष्म पोषक तत्व पाये जाते है ।

५. त्वचा का कैसा भी रोग हो,वो शरीर मे सल्फर की कमी से होता है ।SOARISES,EGZIMA घुटने दुखना,खासी, जूकाम,टिबी आदि सब गोमूत्र के सेवन से ठिक हो जाते है,क्योंकी यह सल्फर का भंडार है ।

६. शरीर मे एक रसायन होता है जिसे CURCUMIN कहते है । इसकी कमी से कॅन्सर रोग होता है । जब इसकी कमी होती है तो शरीर के सेल बेकाबू हो जाते है और टयूमर का रुप ले लेता है । गोमूत्र और हल्दी मे यह रसायन प्रचंड मात्रा मे पाया जाता है ।

७. आंख के रोग कफ से होते है । आंखों के कई गंभीर रोग है जैसे ग्लूकोमा (जिसका कोई इलाज नही है,ॲलोपॅथी मे)मोतियाबिंदू आदि सब आंखों के रोग गोमूत्र से ठिक हो जाते है । ठिक होने को मतलब कंट्रोल नही,जड से हो जाते है । आपको करणा बस इतना है की ताजे गोमूत्र को कपडे से छानकर आँखो मे डालना है ।

८. गाय के मूत्र मे पाणी मिलाकर बाल धोने से गजब की कंडिशनिंग होती है ।

९. छोटे बच्चों को बहूत जल्दी सर्दी जूकाम हो जाता है। १ चम्मच गोमूत्र पिला दिजीए सारी बलगम साफ हो जायेगी

१०.किडणी तथा मूत्र से संबंधीत कोई समस्या हो जैसे पेशाब रुक कर आना,लाल आना,आदि आदि तो आधा कप (५० मिली) गोमूत्र सुबह-शाम खाली पेट पी ले । इसको दोबार पिये यानी पहले अधा पिये फिर कुछ मिनट बाद बाकी पि ले । कुछ हि दिनों मे लाभ का अनुभव होगा ।

११. बहूत कब्ज हो तो कुछ दिन तक आधा कप गोमूत्र पिने से कब्ज खत्म हो जाती है ।

१२. गोमूत्र की मालीश से त्वचा पर सफेद धब्बे और डार्क सर्कल कुछ हि दिनों में खत्म हो जाते है ।

१३. आंखों की बिमारी है तो १-१ बूंद गाय मूत्र आखों मे डालों आखों की बिमारी मिट जायेगी ।

१४. कान की बिमारी है कान मे डालों कान की बिमारी मिट जायेगी ।

१५. खुजली हो जाय गोमूत्र की मालीश करों खुजली कम हो जायेगी ।

१६. जो लोग आधा कप गोमूत्र रोज पीते है उनकी दारू छूट जाती है,क्योंकी गोमूत्र मे सल्फर है और बहूत मात्रा मे है

१७. गोवा,मावा,गुटका,पान पराग,बिडी सब छूट जाता है । और कभी कभी मुंह मे फोडा हो जाता है,जो गुटका खा-खा के,जिसको हम कॅन्सर की पहली स्टेज कहते है । गोमूत्र मुंह मे भरों और उसे मुंह मे गोल घुमाओं और कुल्ला करणा शुरु कर दो फोडा मिट जागेगा । गोमूत्र को दवा के रूप मे उपयोग करों । व्यसन को छोडने मे इस्तेमाल करों शरीर की बिमारीयों को दूर करणे मे इस्तेमाल करों ।

गोमूत्र को सुबह खालीपेट पिना सर्वोत्तम होता है । जो लोग बहूत बिमार है,उन्हे १०० मिली से अधिक सेवन नही करणा चाहिए । निरोगी व्यक्ती को ५० मिली से अधिक नही पिना चाहिए । गोमूत्र केवल उन्ही गोमाता का पिएंजो चलती हो क्योंकी उन्ही का मूत्र उपयोगी होता है । बैठी हुवी गोमाता का मूत्र किसी काम का नही होता । जैसे जर्सी गाय का मूत्र कभी नही घुमती उसके मूत्र मे केवल ३ ही पोषक तत्व पाये गये है । वही देशी गाय के मूत्र १८ पोषक तत्व पाये जाते है ।

ऱ्हदय ब्लॉक का आयुर्वेदिक ईलाज –

दोस्तो...अमेरिका की बडी–बडी कंपनीया जो दवाईया भारत मे बेच रही है । आपको जो अमेरिका की सबसे खतरनाक दवा दी जा रही है । वो आज कल दिल के रोगी को सबसे दी जा रही है । भगवान ना करें की आपको कभी जिंदगी मे दिल को दौरा आये...! लेकिन अगर आ गया तो आप जायेंगे डॉक्टर के पास । आपको मालूम है, वो सलाह देता है और कहेता है एंजीयोप्लास्टी करवालों । एंजीयोप्लास्टी क्या है? एंजीयोप्लास्टी ऑपरेशन में डॉक्टर दिल की नली मे एक स्प्रिंग डालते है । उसको स्टैंट कहते है और ये स्टैंट अमेरिका से आता है और इसकी किमत सिर्फ ३ डॉलर का है । यहाँ भारत मे लाकर वो ३–५ लाख रुपये मे बेचते है और ऐसे लूटते है आपको । डॉक्टको इसका कमीशन होता है,एकबार स्टैंट डालेंगे तो २–३ साल बाद दुबारा डालना पडेगा । इसिलिए वो बार बार कहते है एंजीयोप्लास्टी करवाओं। इसलिए कभी मत करवाए... **तो फिर आप बोलेंगे हम क्या करें** ???

आप इसका आयुर्वेदिक इलाज करें बहूत बहूत ही सरल है । पहले आप एक बात जान लिजीए । एंजीयोप्लास्टी ऑपरेशन कभी किसी का सफल नही होता । क्योंकी डॉक्टर जो स्प्रिंग दिल की नली मे डालता है,वो स्प्रिंग बिलकूल पेन की स्प्रिंग की तरह होता है । और कुछ दिन बाद उस स्प्रिंग की दोनों साईड आगे और पिछे फिर ब्लॉकेज जमा होनी शुरु हो जाती है । फिर डॉक्टर कहता है,एंजीयोप्लास्टी करवाओ । इस तरह आपके लाखों रुपये लूटता है और आपकी जिंदगी इसी मे निकल जाती है । **अब पढीये इसका आयुर्वेदिक इलाज....**

हमारे देश मे ३००० साल पहले एक बहूत बडे ऋषि हुये थे,जिनका नाम था महाऋषि वागभट्ट जी । इन्होने एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम है अष्टांग ऱ्हदयम और इस पुस्तक मे उन्होने बिमारीयोंको ठिक करणे के लिए ७००० सुत्र लिखे थे । ये उनमे से ही एक सुत्र है वागभट्टजी लिखते है,कभी भी ऱ्हदय मे मतलब दिल की नली मे ब्लॉकेज होना शुरू हो रहा है,तो इसका मतलब है की रक्त (ब्लड) मे आम्लता (ॲसिडीटी) बढी हुवी है ।

आम्लता (ॲसिडीटी) दो तरह की होती है,पेट की आम्लता और एक होती है रक्त की आम्लता । आपके पेट मे आम्लता जब बढती है,तो आप कहेंगे पेट मे जलन सी हो रही है । खट्टी खट्टी डकार आ रही है । मुंह से पाणी निकल रहा है । ये आम्लता और बढ जाये तो हाईपर ॲसिडीटी होगी । और यही पेट की आम्लता बढते बढते जब रक्त मे आती है तो रक्त आम्लता (ब्लड ॲसिडिटी) होती है ।

और जब ब्लड मे ॲसिडीटी बढती है तो ये आमलिय रक्त दिल की नलीयों से निकल नही पाता,और नलिया मे ब्लॉकेज कर देता है । तभी दिल का दौरा होता है । इसके बिना दिल का दौरा नही होता । और आयुर्वेद का सबसे बढा सच है जिसको कोई डॉक्टर आपको बताता नही । क्यूंकी इसका इलाज सबसे सरल है ।

ईलाज क्या है ? वागभट्ट जी लिखते है की.... जब रक्त की आम्लता बढ गई है,तो आप ऐसी चिजों का उपयोग करो जो क्षारीय है । आप जानते है दो तरह की चिजें होती है १.आम्लीय (ॲसेडिक) २.क्षारीय (अल्कलाईन अब आम्ल और क्षार को मिला दो तो न्यूट्रल (उदासिन) होता है,ये आप सब जानते है । जब रक्त की आम्लता बढ गयी हो तो क्षारीय चिजें खाओं । तो रक्त की आम्लता न्यूट्रल हो जायेगी और रक्त मे आम्लता न्यूट्रल होई,तो दिल का दौरा जिंदगी मे आने की कभी संभावना ही नही । ये है सारी कहाणी ।

अब आप पुछोगे जी ऐसी कौनसी चिजें है,जो क्षारीय है और हम खाये ? आपके रसोई घर में सुबह से शाम तक ऐसी बहूत सी चिजे है,जो क्षारीय है । जिन्हे आप खाये तो कभी दिल का दौरा ना आयें । और आ गया है तो दुबारा ना आये ।

सबसे ज्यादा आपके घर मे क्षारीय चिज है वो है लौकी,जिसे आप दुधी भी कहते है । जिसे आप सब्जी के रुप में खाते है । इससे ज्यादा कोई क्षारीय चिज ही नही है । तो आप रोज लौकी का रस निकाल कर पिये या कच्ची लौकी खाये । रोज २०० से ३०० मिली लौकी का ज्यूस सुबह खाली पेट (संडास करणे के बाद) पी सकते है या नाश्ते के आधे घंटे के बाद पी सकते है ।

इस लौकी के रस को आप और ज्यादा क्षारीय बना सकते है । इसमे ८-१० तूलसी के पत्ते डाल सकते है । इसके साथ आप पुदीने के ८-१० पत्ते मिला सकते है । इसके साथ आप काला नमक या सेंधा नमक जरुर डाले ये भी बहूत क्षारीय है । लेकिन याद रखे नमक काला या सेंधा नमक ही डाले । वो दुसरा आयोडिन युक्त नमक कभी भी ना डाले । ये आयोडिन युक्त नमक आम्लीय है । तो मित्रों आप इस लौकी के ज्यूस का सेवन जरुन करें ।२-३ महिने मे आपके ऱ्हदय की सारी ब्लॉकेज ठिक कर देगा । २१ वे दिन ही आपको बहूत ज्यादा असर दिखना शुरू हो जायेगा।

लौकी का परिक्षण -

ये कैसे पता करें की लौकी असली है या इंजेक्शन लगी हुवी है ? आप लोग लौकी पर नाखून लगाकर देख लिजीए की नाखून पुरा अंदर जाता है या नही ? अगर नाखून अंदर जाता है तो लौकी असली है । नाखून अंदर पूरा अंदर नही जाता है और वह पर केवल निशान बन जाता है तो लौकी इंजेक्शन लगाई गई लौकी है ।

अब आप पुछोगे की पेट की आम्लता ही ना बढे इसके लिए क्या है तो इसके लिए राजीवभाई कहते है, जिसे आपके जीवन मे हमेशा के लिए उतारणा है,उसका पालन करणा है । तो आगे ध्यान से पढीये और अंमलकिजीए

१. सुबह सुबह निंद से उठने के बाद,बिना मुंह धोये,बांसी मुंह २-३ ग्लास पाणी पिये।

२. पाणी जब भी पिये ठंडा माने फ्रिज का पाणी कभी ना पिये । मटके का पाणी पि सकते है,फ्रिज का नही ।

३. पाणी जब भी पिये बैठकर पिये । इसके दो फायदे है १. आपके पेट मे कभी गॅस नही बनेगी २. आपके घुटने कभी नही दर्द करेंगे ।

४. भोजन करने के तुरंत बाद पाणी कभी ना पिये,मतलब भोजन के देड घंटे बाद पाणी पिये या भोजन करणेके ४८ मिनट पहले पाणी पिये । घांस अटक गया हो तो २ घुंट पाणी पी सकते है । रोटी और चावल के बिच दो घुंट पाणी पी सकते है ।

५. आपने रोज के भोजन मे आयोडिन वाला नमक कभी ना खाये । उसके जगह सेंधा नमक खाये ।

६. अपने रसोई मे भोजन करते समय रिफाइंड तेल का उपयोग ना करें । रिफाइंड तेल आपके शरीर मे ब्लॉकेज तयार करता है । बाजार मे जबसे रिफाईंड तेल आया है,तब से ऱ्हदयघात आना तेजी से बढा है । अब आप पुछेंगे की कौनसा तेल खाये तो राजीवभाई कहते है,आप जिस राज्य और अबू हवा मे रहते है,और आपके यहाँ जोफसल बनती है या पकती है उस वस्तू का कच्ची घानी का तेल खाये । जैसे आप महाराष्ट्र मे तो वहाँ करडी,सुरजमुखी, मुंगफली की फसल ज्यादा होती है,तो आप इन्ही का कच्ची घानी का तेल खाये । आप केरल या चेन्नई मे रहते है तो आप नारीयल का तेल खाये । अगर आप बिहार,उत्तरप्रदेश,झारखंड,पंजाब,हरियाणा,छत्तीसगड मे रहते है तो आप सरसों का कच्ची घानी का तेल खाये । अगर आप गुजरात मे रहते है तो मुंगफली या तिल्ली का तेल खाये । जहा कही भी मिले वहाँ से लाकर खाये मगर कच्ची घानी का ही तेल लाकर खाये । भूलकर भी रिफाईंड तेल ना खाये ।

७. सुबह सुबह कोलगेट,पेप्सोडेंट से ब्रश ना करें । इससे पेट की आम्लता बढती है ।

चूना जो आप पान मे खाते है वो ७० बिमारी ठिक कर देता है –

भारत के जो लोग पान मे चूना लगाके खाते है,वो बहूत होशियार लोग है,पर तंबाखू नही खाना,तंबाखू जहर है और चूना अमृत है । तो चूना खाईये तंबाखू मत खाईये और पान खाईये चूने का...उसमे कत्था मत लगाईये... कत्था कॅन्सर करता है...पान मे सुपारी मत डालीये...सोंठ डालीये...ईलायची डालीये...लौंग डालीये.क्रेशर डालीये...तंबाखू नही...कत्था नही...सुपारी नही...।

महिलाओं के लिए गर्भाशय की बिमारीयों में यह बहूत अच्छा काम करता है जैसे कि सफेद पाणी आना,लाल पाणी आना,माहवारी आगे पिछे होना,गर्भाशय मे गांठ बन जाना तथा अन्य गर्भाशय से जूडी बिमारीयों को चूना ठिक कर देता है ।

बाल टूटना,चेहरे के मुंहासे,हड्डी टूटने पर,जोडों के दर्द मे,हिमोग्लोबीन कम होनेपर,हेपाटायटिस ए,बी,सी,डी,ई,स्मरण शक्ती कम हो तो,हाथीपाय हो गया हो तो इन सब बिमारीयों मे चूना दही मे अथवा पाणी मे मिलाकर पिना चाहिये ।

पुरुषोंमे शुक्रानू बढाने के लिए चूना गन्ने के रस मे,संतरे या मोसंबी के रस मे लेना चाहिए । १४ साल के कम आयू से कम बच्चे जिनका कद छोटा हो,महिलाये जिनमे वक्ष का कम विकास हो,दातों की समस्या हो,इन सब मे चूने का सेवन करना अत्यंत लाभदायक है ।

जैसे किसी को पिलीया (जॉन्डीस,काविळ) हो जाये उसकी अच्छी दवा है चूना गन्ने के रस मिलाकर पिने से पिलीया जल्दी ठिक होता है ।

यही चूना नंपूसकता की बहूत अच्छी दवा है । अगर किसी पुरूष के शरीर मे शुक्राणू नही बनते है तो उसको गन्ने के रस मे चूना पिलाया जाय तो देड साल मे भरपूर मात्रा में शुक्राणू बनने लगेंगे । और जिन माताओं के शरीर मे अंडे नही बनते उनकी लिये बहूत अच्छी दवा है चूना ।

विद्यार्थी यों के लिए बहूत अच्छी दवा चूना जो उनका कद (लंबाई) बढाता है । लंबाई बढाने के साथ साथ स्मरण शक्ती भी बढाता है । जिन बच्चो की बुध्दी कम काम करती है,जो बच्चे बुध्दी से कम है,दिमाग देर में काम करता है,देर मे सोचते है,हर चिज उनके लिए स्लो है उन सभी बच्चो को चूना खिलाने से अच्छे हो जायेंगे ।

जिन बहनों को अपने मासिक धर्म में कुछ तकलिफ होती है उन सब की अच्छी दवा है चूना ।

जब कोई माँ गर्भावस्था मे है तो चूना खाना चाहिए,क्योंकी गर्भवती मॉ को सबसे ज्यादा कॅल्शीयम की जरूरत होती है और चूना कॅल्शीयम का सबसे बडा भंडार है । गर्भवती मॉ को चूना खिलाना चाहिए,अनार के रस मे गहू के दाने बराबर चूना मिलाके रोज पिलाये अगर यही नौ महिने लगातार पिते है,तो इसके जबरदस्त चार फायदे होंगे १. मॉ को बच्चे के जनम के समय कोई तकलिफ नही होगी और नॉरमल (नैसर्गीक) डिलेवरी होगी ।२. बच्चा जो जनम लेगा वो बहूत धष्ट-पुष्ट और तंदूरूस्त होगा ।३. वो बच्चा जिंदगी मे जल्दी बिमार नही पडता,जिसकी मॉ ने चूना खाया हो । ४. सबसे बडा लाभ वो बच्चा बहूत होशियार और बुध्दीमान होगा,उसका आयक्यू लेवल बहूत अच्छा होगा ।

चूना घुटने का दर्द ठिक करता है,कमर का दर्द ठिक करता है,कंधे का दर्द ठिक करता है,और एक खतरनाक बिमारी है स्पॉडिलाटिस वो चूने से ठिक होती है । रिढ कि हड्डी की सब बिमारीया चूने से ठिक होती है । अगर आपकी हड्डी टूट जाये तो टूटी हुई हड्डी को जोडने की ताकत सबसे ज्यादा चूने मे है । चूना खाईये सुबह खाली पेट ।

अगर मुंह मे ठंडा गरम पाणी लगता है तो चूना खाओ बिलकूल ठिक हो जाओगे । मुंह मे अगर छाले है तो चूने का पाणी पिये तूरंत ठिक हो जायेगा । शरीर मे जब खून कम हो जाये तो चूना जरूर खाये,ॲनिमिया हो या खून की कमी हो उसकी सबसे अच्छी दवा है चूना । ये चूना पिते रहो गन्ने के रस मे,अनार के रस मे,संतरेके रस मे,मोसंबी के रस मे,छांछ मे,मठ्ठे मे,पाणी मे,दाल मे,चावल मे,रोटी मे शरीर की सारी बिमारीया आराम से कम कर देता है ।

आज क्यों बिमार पड रहे ? लोग रोज नई नई बिमारीया कहाँ से आ रही है ?
अगर विज्ञान ने प्रगती कर ली है तो बिमारी कम होने के बजाय क्यूं बढ रही है ?
लोगों का ज्यादा समय और पैसा अस्पताल मे क्यों जा रहा है ? क्या यही है विज्ञान की प्रगती ?????
२५/३० साल पहले कुँए का मैला कुचला पाणी पिके भी लोग १०० वर्ष तक जी लेते थे ।
और आज हम ठज का शुध्द फिल्टर पाणी पिकर भी ४०/४५ वर्ष मे बुढे हो रहे है ।
वो घाणी का मैला सा तेल खाके बुढापे मे भी दौड–मेहनत कर लेते थे ।
और हम डबल,ट्रिपल रिफाईंन फिल्टर तेल खाकर भी हांप रहे है ।
वो डळेवाला लून(खडेमिठ) सेंधा नमक और काला नमक खाके बिमार नहि पडते थे,
और हम आयोडिनवाला नमक खाके भी लो–बीपी,हाय–बीपी मे परेशान है ।
वो पहले मिट्टी के बर्तन मे भोजन बनाके खाते थे तो सालों साल तंदुरूस्त रहते थे,
और आज हम कुकर,मायक्रोवेओहन,रेफ्रिजरेटर का खाना खाके बिमार हो रहे है ।
वो निम,बबूल,कोयला–नमक से दांत चमकाते थे और ९०/९५ वर्ष तक भोजन चबा–चबा कर खाते थे,
और हम लोग क्लोजअप,कोलगेट सुरक्षावाले रोज डेंटिस्ट के चक्कर लगाते है ।
वो नाडी पकडकर रोग बता देते थे,और आज जांच करणेपर भी रोग नही जान पाते है ।
वो १०/१२ बच्चे को जनमदेणे वाली मॉ ८०/८५ वर्ष कि अवस्था मे भी घर और खेत का काम करती थी,
और आज एक महिने से डॉक्टर कि देखरेख मे रहते है फिर भी बच्चे पेटफाडकर जनम लेते है ।
वो लोग पहले काले गुड कि मिठाईया ठोक ठोक के खा जाते थे,
और आजकल तो खाने के पहले ही शुगर कि बीमारी हो जाती है ।
पहले तो बुजूर्गो के भी गोडे–मोढे नही दुखते थे और आज जवान भी घुटने और कंधो के दर्द से कहराता है ।
वो लोग पहले दालचिणी,सुंठ,मिरे और गुड का काढा पिकर भी चुस्त–स्फुर्तीले रहते थे,
और आज लिप्टन,ब्रूकबाँड,टाटा चाय,बुस्ट,बोर्नव्हिटा पिकर भी थक जाते है ।
वो लोग पहले छाछ,निंबूशरबत,देशी गाय का दुध पिकर भी तंदुरूस्त और ओजवान रहते थे,
और आज पेप्सी,कोकाकोला,थम्सअप,मिरींडा,स्प्राईट पिकर भी बिमार और कमजोर होते है ।
वो लोग पहले चने का आटा,मुलतानी मिट्टी,हल्दी,मख्खन से नहाते थे तो तेजस्वी दिखते थे
और आज लाईफबॉय (अमरीका मे कुत्ते का नहाने का साबून) लक्स,डव्ह,पियर्स,लॅक्मे,
मोती,पॉन्डस,रेक्सोना,लॅक्मे अदि से नहा के भी बदन से बदबू आती है
और चेहरा और शरीर की परत को खराब कर रहे है।
और भी बहूतसी समस्याये है फिर भी लोग इसे विज्ञान का युग कहते है,
समझ मे नही आता, **ये विज्ञान का युग है या अपने अज्ञान का ?????**

शरीर मे जमा हुवा युरिक ॲसिड कम करणे के घरेलू उपाय -

आजकल की जींदगी मे हर कोई किसी समस्या से परेशान है,पिडित है । जोडों का दर्द ये समस्यो बुढोप मे आती थी,मगर आज कल की जीवन शैली,खानपान और अपनी विपरीत हुवी दिनचर्या के कारण इस बिमारी ने हमे अपना बना लिया है । जोडो के दर्द की समस्या आज ४० साल के पहले ही आ रही है । जोडो के दर्द केलिए ॲलोपॅथी मे जो दवाये दी जाती है,उसके दुष्परिणाम बहोत है । लगातार ॲलोपॅथी दवाओं के सेवन के कारण किडणी खराब होने की समस्या बढ रही है,हड्डीया कमजोर हो रही है । ॲलोपॅथी मे इसका कोई इलाज नही । हमारे अशुध्द खान-पान में आया हुवा बदलाव बिमारी का कारण है । हमने नैसर्गिक रहना छोड दिया है । मॉडर्न और चमचमाती दुन्या हमपर हवी हो गई है । युरिक ॲसिड शरीर मे जमा होने कारण शरीर मे आकडन पैदा होती है । छोट-छोटे जोडो में दर्द होता है । काफी दिनों के बाद यह दर्द छोटे छोटे जोडों से यानी उंगलिया,कलाई के कांधे,गर्दन,घुटने,पैर की एडीया से लेकर सारे शरीर मे फैलता है । अगर युरीक ॲसिड से निजात पाणी है,शरीर के जोडों का दर्द कम करणा है,तो अपनी जीवन शैली को बदलना पडेगा । अगर शरीर का युरिक ॲसिड शरीर से निकल गया तो जोडों का दर्द भी चला जायेगा । आप पुन स्वस्थ जींदगी जी सकोगे । इसके लिए कुछ घरेलू उपाय है,पर इसे कम से कम ३-४ महिने तक बिना रुके करणा है । तो घरेलू उपाय क्या है ये देखते है ....

१. १ चम्मच अश्वगंधा पावडर मे एक चम्मच शहद मे मिलाकर एक ग्लास गुनगुने दूध मे मिलाकर पिना है ।
२. रोज रात को सोने के पुर्व ३ अक्रोड खाने से शरीर मे जमा हुवा युरिक ॲसिड पिघल जायेगा ।
३. ॲलोवेरा(घृतकुमारी,कोरफड) ज्यूस मे आंवला ज्यूस मिलाकर पिने से लाभ होता है ।
४. रोज नारीयल पाणी पिये ।
६. रोज भोजन के बाद अलसी के बिज को चबाचबाकर खाये ।
७. बथूवे का ज्यूस खाली पेट पिये । और २ घंटे तक कुछ ना खाये ।
८. भोजन मे आजवायन का प्रयोग करें ।
९. दो चम्मच सेब का सिरका १ ग्लास पाणी मे मिलाकर दिन मे ३ बार पिये ।
१०.सेब,गाजर और चुकंदर (बिट) का ज्यूस पिणे से बॉडी का पीच लेवल बढता है ।
११. पतीते को काटकर,उसके छोटे-छोटे टूकडे करके २ लिटर पाणी डाले,उसे उबालकर इस पाणी को गुनगुना करके छानकर चाय की तरह पिये ।
१२. शरीर मे विटामीन सी की मात्रा बढाने के लिए निंबू पाणी पिये,आंवला खाये । ज्यूस पिये ।
१३. लौकी के ज्यूस मे तूलसी और पुदिना के १०-१० पत्ते डालकर ज्यूस बनाकर उसमे सेंधा नमक डालकर पिये ।
१४. रात को एक ग्लास पाणी मे अर्जून की छाल, एक चम्मच दालचिनी पावडर उबाले और छानकर चाय की तरह पिये
१५. रोज ३-४ लिटर पाणी पिये ।

अब आप पुछोगे परहेज क्या करणा है ? तो आपको दही,चावल,आचार,मुंगफली,ड्रायफूडस,पालक दाल तत्काल बंद करणा है । डिब्बा बंद वस्तू खाने से बचे,पिझ्झा,बर्गर,वडा पाव,पेस्ट्री,केक,बंद करे । इसके सिवा अंडा मांस,मंछली, सिगारेट,बिडी, तंबाखू, गुटका,शराब,का सेवन न करें ।

इसके अलावा ब्लडप्रेशर,जोडो का दर्द,हार्ट प्रॉब्लेम,शुगर मे भी बहूत असरदार और फायदेमंद होगी